अन्तरा-शब्दशक्ति

धागा प्रीत का

काव्य संग्रह

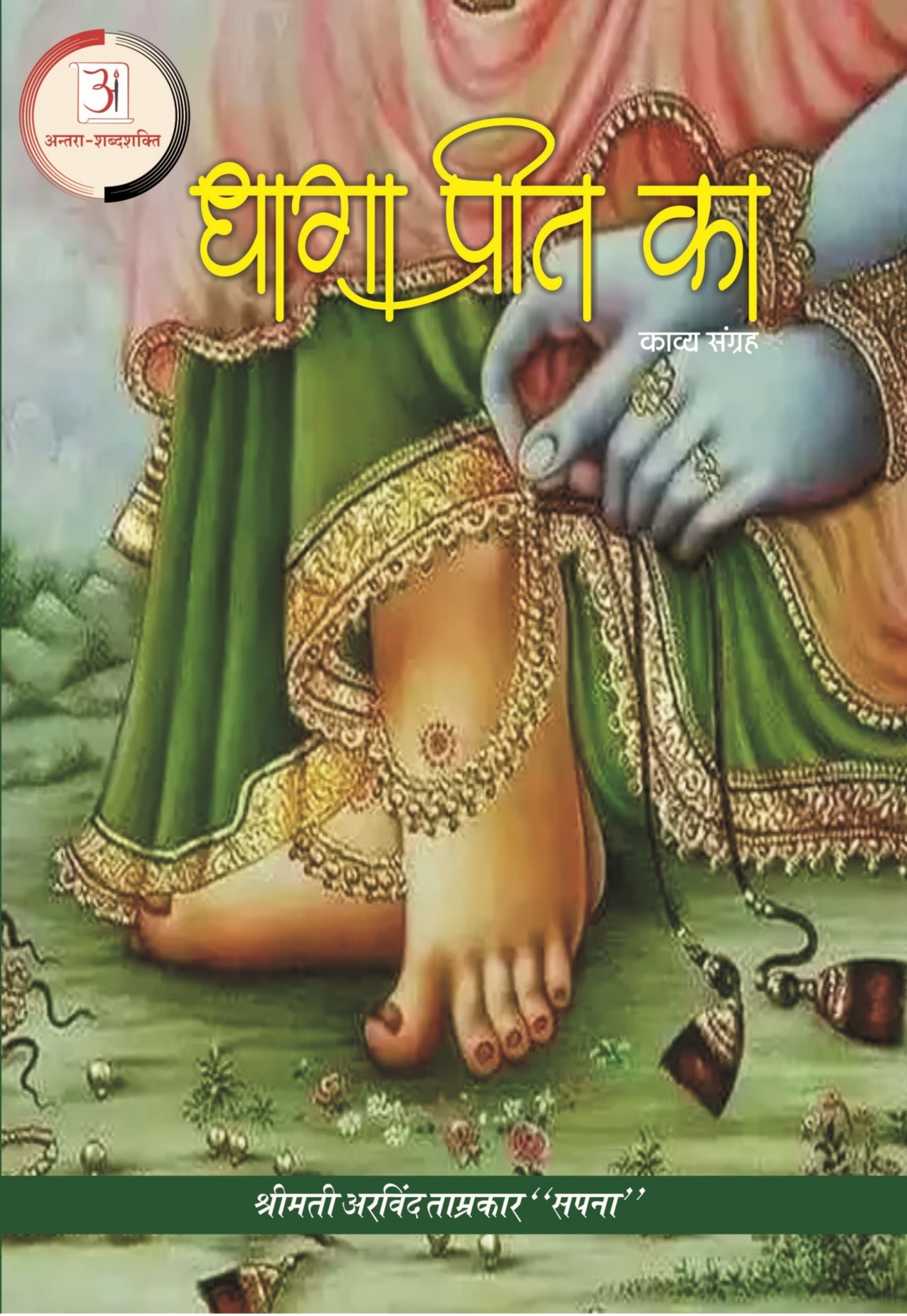

श्रीमती अरविंद ताम्रकार ''सपना''

धागा प्रीत का

(काव्य संग्रह)

अरविंद ताम्रकार 'सपना'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-5372-018-6"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- अरविंद ताम्रकार 'सपना'
मूल्य - ६०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी,वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
DHAGA PREET KA BY ARVIND TAMRAKAR SAPNA
वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है.

अनुक्रमणिका

1. भूमिका 5
2. धागा प्रीत का 7
3. मन की बात 16
4. मैं लिखती हूँ 17
5. कहीं और चल 18
6. आँचल 19
7. वक़्त 20
8. बिखरते शब्द 21

9. आखिर क्यों? 22

10. परेशानी 23

11. मजदूर 24

12. प्रेम 25

13. अधर बोलते हैं 26

14. काश! 27

15. कुछ कहा तुमने? 28

16. कुछ और होती 29

17. अधूरा ही रह गया 50

18. अनमोल वचन 31

भूमिका

सृजन के इस संक्षिप्त प्रयास को, मुक्तक व ईश भजन के रूप में आप सभी बुद्धिजीवी, पाठक वृन्द के समक्ष रखने का जो अवसर, परमात्मा ने मुझे प्रदान किया है, उससे मैं आप सभी की कृतज्ञ हूँ, व स्वयं को अत्यंत खुश व आल्हादित महसूस कर रही हूँ। आप सभी का शुभाशीष, उत्साह वर्धन एवं बेहतर सृजन में मेरे लिए सहयोगी होगा। आप सभी की शुभकामनाएं व आशीष सदा बना रहे।

जीवन के उतार-चढ़ाव, सुख-दुख जो भी मैंने अपने छोटे से जीवन मे महसूस किए, उन्हीं को मैं अपने लेखन में उत्सुकता व जागरूकता का मूल कारण मानती हूँ।

मेरे बड़े दादाजी स्व.श्यामसुंदर हयारण 'मृदु' जी, जो एक लोकप्रिय एवं प्रभावशाली, स्थापित क्षेत्रीय कवि थे, उनका अल्प सानिध्य मुझे आज भी लेखन के लिए प्रेरित करता है। लेखन के लिए एक संवेदनशील हृदय तथा जीव मात्र की भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता के लिए मैं उनकी आभारी हूँ। उनके अनुसार जीव मात्र के प्रति गहन करुणा व दया से सराबोर हृदय ही संवेदनशील हो सकता है, उनके सही मार्गदर्शन के लिए आज भी उनकी आभारी हूँ।

नारीमन के उतार-चढ़ाव, दुविधाओं एवं विचारों का यह चित्रण आप सभी को पसंद आएगा, ऐसा मेरा अनुमान है।

अंत में ईश्वर द्वारा प्रदत्त सृजन शक्ति के लिए उन परमपिता परमात्मा, सद्गुरुदेव जी का बहुत-बहुत धन्यवाद व आप सभी को कोटिशः नमन एवं अंतरा शब्द-शक्ति प्रकाशन को भी बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्रीमति अरविंद ताम्रकार "सपना"
42,अमरनाथ कॉलोनी,
कोलार रोड भोपाल

धागा प्रीत का

1.
धागा प्रीत का न कमजोर समझना,
न इसमें बंधे लोगों पर कभी वार करना,
इस नाजुक और पवित्र धागे में बड़ी ताकत है,
उन पर न कभी कोई जोर आजमाइश करना।

2.
धागा प्रीत का बाँधे से नहीं बंधता,
धागा प्रीत का तोड़े से नहीं टूटता,
होता है बड़ा मजबूत ये धागा,
चाहो अगर तो ये जोड़े से भी नही जुड़ता।

3.
धागा प्रीत का कभी, यूँ चटकता नहीं है,
इससे सच में बंधा मानुष, कभी भटकता नही है,
जो निभाते हैं पूरी निष्ठा से, इसे जिंदगी भर,
वो समझते हैं इस पावन धागे का महत्व, इसे यूँ ही कोई झटकता नही है।

4.
प्रेम को परिभाषित करना, हमेशा जरूरी नहीं होता,
जिसे परिभाषित करना पड़े, वो तो प्रेम ही नही होता,
किया है सच्चा प्रेम बहुतों ने, इस जग में साथियो,
लैला-मजनूं, हीर-रांझा का नाम, यूँ ही यहाँ मशहूर नही होता।

5.
क्या कहूँ, मैं अब, कुछ कह नहीं सकती,
तुम्हारी बेरुखी भी अब मैं, सह नहीं सकती,
क्या करूँ यारा मैं, जिससे तुमको मना लूँ,
क्योंकि तुम्हारे बिना, अब मैं रह नहीं सकती।

6.
हाल दिल का तुम्हें सुनाते, जो तुम पास होते,
अश्क भी तुम्हारे साथ बहाते, जो तुम पास होते,
चांदनी रात की उन हसीन मुलाकातों को,
एक बार फिर से दोहराते, जो तुम पास होते।

7.
कहीं तो आस बाकी है आपकी, कहती हैं रुकती साँसें,
तकती हैं अभी भी राह आपकी, ये दो झपती आँखें,
जिंदगी में सब कुछ मिला, बस आपके सिवा,
तरसती व तलाशती रही हर जगह, आपको मेरी आँखें।

8.
तुम पर यारा मुझे गुरुर है,
आँखों मे प्रिय प्यार का शुरुर है,
इतराती व नाज करती हूं तुम्ही पर,
तुमसे एक बार प्रिय, ये कहना जरूर है।
9.
हर दिया आपकी दहलीज पर जले,
हर फूल आपके आंगन में खिले,
आपकी जिंदगी का सफर हो, इतना हसीन,
कि हर खुशी आपके संग -संग चले।

10.
क्या करूँ कि वो, पहले जैसे हो जाएं,
क्या करूँ कि वो, पहले जैसे हँस पाएँ,

क्या हुआ मुझसे गलत, समझ ही न आया,
ऐसे हुए ओझल वो, कि हम अलविदा भी न कह पाए।

11.
नहीं जानती, प्यार क्या होता है,
नहीं जानती, विश्वास क्या होता है,
बस अच्छा लगता है कोई बहुत,
यही एहसास क्या कम होता है।

12.
भावनाएँ सच्ची होती हैं अगर,
तमन्नाएँ अच्छी होती हैं अगर,
होती हैं वो जरूर पूरी,
श्रद्धा सच्ची होती है अगर।

13.
साथी कोई बचपन का, जब मिल गया,
बेनूर चेहरे पर खुशी का, नूर खिल गया,
कैसे बयाँ करूँ वह, पाक खुशी अपनी,
जिसका इंतजार था मुझे, वही मिल गया।

14.
जहाँ देखो वहाँ तुम हो, जिधर देखूँ उधर तुम हो,
तुम्हारे बिना नहीं कुछ मैं, मेरा तो सब कुछ ही तुम हो,
जीना दुश्वार है बिन तुम्हारे, यूँ भी मेरे हमदम,
मेरे सपने साकार तुमसे हैं, और उनका आकार भी तुम हो।

15.
तुम्हारी सरलता और सादगी ने, दिल लुभा लिया,
तुम्हारी निश्छल, निर्मल निगाहों ने, जमाना भुला दिया,
न हो कुछ मेरा और, अब इस दुनिया में, तो गम नहीं,
तुम्हारे सच्चे प्यार ने तो, मुझे जीना सिखा दिया।

16.
मन कहता है दौड़कर, तुम्हारे पास आऊँ,
गर होते पर मेरे तो लगता, उड़कर पहुँच जाऊँ,
पर पता तो हो कि तुम, कैसे कहाँ पर हो,
आऊँ और आकर तुमसे, बेल सी लिपट जाऊँ।

17.
तुमसे जब बात होती है, तो कुछ बोलना सूझता नहीं,
जब तुम कुछ पूछते हो, तो कुछ बूझता नहीं,
क्या कर दिया है तुमने मुझे, ए मेरे हमसफ़र,
बिन तुम्हारी याद, मेरा एक पल भी मुझे पूछता नहीं।

18.
दिल किसी का दुखाना, अच्छी बात नहीं है,
बीच बाजार किस्से सुनाना, अच्छी बात नहीं है,

तुम्हारे दिल के कोने में, अगर कोई प्यार पलता है,
सरे आम दिल खोल दिखलाना, अच्छी बात नहीं है।

19.
कहना किसी से, कि किसी से न कहना,
नहीं कहेगा वह किसी से, बेफिकर मत रहना,
आपके अपने ही आपको, बनाते हैं तमाशा,
इस असलियत से तुम यूँ, अनजान मत रहना।

20.
आँखों मे आँसू, जब आते हैं,
दिल की कोई पीड़ा को, बाहर लाते हैं,
छिपा लेना दुनिया वालों से, तुम अपने आँसू,
क्योंकि वो इनकी कद्र व कीमत, दोनों नहीं समझ पाते हैं।
21.
करो कोई बात ऐंसी, जो दिल को लुभा जाए,
कोई कमी, कोई पीड़ा, सब कुछ भुला जाए,
दिलों को लुभाना, भुलाना अलग बात है,
तदबीर निकालो कुछ ऐसी, जो दिल को बहला जाए।

22.
मुस्कराना और मुस्कराने देना, बड़ी बात है,
सुकून से जीना और जीने देना, बड़ी बात है,
यह जिंदगी है ईश्वर की, अनमोल सौगात,
यही समझ ले हर इंसा, तो फिर क्या बात है।

23.
यादें पीछा नहीं छोड़ती, जिंदगी भर,
आती हैं सामने बार-बार, जिंदगी भर,
जैसे ले रहीं हों बदला, किसी जनम का,
करतीं हैं मजबूर गिराने आँसू, जिंदगी भर।

24.
न तुम कुछ कहते हो, न मुझे कहने देते हो,
अगर कुछ समझ नहीं आया तो, कमी मेरी बताते हो,
कुछ समझने के लिए, कुछ कहना-सुनना जरूरी होता है,
कुछ कहे-सुने बिना ही क्यों, तोहमत मुझ पर लगाते हो।
25.
ए दिल, करना नहीं इंतजार किसी का तुम,
ए दिल, करना नहीं एतबार, किसी का तुम,
सभी मतलब परस्त हैं दुनिया में,
ए दिल, बातों में न आ जाना, किसी की तुम।

26.
कैसे कहूँ, कासे कहूँ, कुछ समझ नहीं आता,
दिल की पीड़ा को, जस के तस बयां करना नहीं आता,
लद गए वो दिन जब, बिन कहे ही समझ लेते थे लोग,
अब कोई इतना अपना, भी तो नजर नहीं आता।

27.
रंग-रूप और धन का घमंड, किसी का नहीं रहता,
समय एक सा सदा ,किसी का नहीं रहता,
आपको मिला है तो, धन्यवाद करो रब का,
बगैर कृपा उसकी, वह भी नहीं टिकता।

28.
साथ देना है अगर तो, बिना एहसान के दो,
मात देना है अगर तो, बिना बतला के दो,
सिखा दो दुनियां को तुम, इंसानियत के मायने,
और खुद सही इंसान, बनके दिखला दो।

29.
नए साल में मेरे गमले में, एक नया फूल खिल गया,
नजर पड़ी जब उस पर मेरी, तो मेरा दिल मचल गया,
पड़ रही थी पहली किरण, सूरज की भी उस पर तभी,
लगा ऐसा जैसे उस फूल संग, मेरा सारा जहाँ खिल गया।

30.
मेरे मासूम दिल को, कुछ तसल्ली देने आ जाओ,
नहीं है आस कोई अब, बंधाने आस आ जाओ,
मैने मांगी नहीं तुमसे कभी, कोई भी ऐसी चीज,
यही अनमोल और उम्दा तोहफा, अब मुझको थमा जाओ।

31.
किसलिए इतनी सजा देते हो मुझे,
कभी करते हो याद, कभी भुला देते हो मुझे,
अजीब है आपकी, चाहत का सिलसिला,
कभी खुशी तो कभी, अपनी ही याद में रुला देते हो मुझे।

32.
मेरी भावनाओं का, तुम खयाल रखना,
आहत न हों ये कभी, इसका ख्याल रखना,
मैंने पूछा दिल से, ये क्या हो गया मुझे,
दिल ने कहा अब जो भी है, दोनों अपना ख्याल रखना।

33.
दिल करता है तुम्हें बुला लूँ,
देखकर तुमको निगाहों में बसा लूं,
पर, प्रियवर तुम हो कहाँ,
कैसे कहाँ तुम्हें आवाज लगा लूँ।

34.
धागा प्रीत का अभी, टूटा नहीं है,

दिल है सच्चा मेरा, झूठा नहीं है,
कहने को तो, बचपन की मुहब्बत है,
पर ये नादाँ दिल, कुछ भी भुला नहीं है।

35.
मन के मोती बिखर गए, पिरोने पक्का धागा नहीं मिला,
जिनको माना था अपना मैंने, उनसे सिला विश्वास का नहीं मिला,
ये दुनिया ऐसी ही मतलबी है जनाब,
फिर भी किसी से, कोई नहीं मुझको शिकवा गिला।

मन की बात

मन की बात, कहूँ तो कैसे,
मन की मन में, रखूँ तो कैसे,
मन मेरा है, खुली किताब,
पर समक्ष किसी के, पढ़ूँ तो कैसे,
अपनों ने ही, कहीं का न छोड़ा,
उनके दिए जख्म, भरूँ तो कैसे,
सहने की शक्ति, होती है सीमित,
सहनशक्ति असीमित, रखूँ तो कैसे,
मन को मारकर, जीना सिखाया सभी ने,
मर-मर कर रोज, जीऊं तो कैसे,
राहों में काँटे, बिछाए सभी ने,
संभल-संभल कर, चलूँ तो कैसे,
पराए का आभास, कराया सभी ने,
किसी को अपना, कहूँ तो कैसे,
साथ छोड़ा समय, पर सभी ने,
हाथ किसी का, गहूँ तो कैसे,
जख्म हरे हैं, मन के सारे,
उनका दर्द, सहूँ तो कैसे।

मैं लिखती हूँ

मैं लिखती हूँ, मन के भावों को,
दूसरों से मिले, भावों के अभावों को,
मैं लिखती हूँ, स्वार्थ में रत रिश्तों को,
स्वार्थ में लिप्त रहते हुए, खो देना फरिश्तो को,
मै लिखती हूँ, जीवन के, उतार-चढ़ाव में हारे रिश्तों को,
हार में मिले दुख रूपी, नासूर बने रिसते नातों को,
मैं लिखती हूँ, अपने दिल की, सच्ची भावनाओं को,
अधूरी छूटी, अपनों की, लालसाओं को,
मैं लिखती हूँ, अपने एकाकी, हारे मन की व्यथाओं को,
अपने आसपास घट रही, बन रही कथाओं को,
मैं लिखती हूँ, कुछ कर गुजरने की, लालसा रखने वालों को,
फिर किसी गुमनामी के, अंधेरे में खो जाने वालों को,
मैं लिखती हूँ, कथनी-करनी, एक न करने वालों को,
उनके कारण दूसरों का, बहुत कुछ खो जाने को,
मैं लिखती हूँ, और चाहती हूँ, कि मानव स्वार्थ में इतना अंधा न हो,
कि कभी खुद से नजरें मिलाने में भी शर्मिंदगी महसूस हो।

कहीं और चल

मेरे मन अब कहीं और चल,
रंजो-गम के जहां से निकल,
जहाँ कोई न हो तेरा,
जहाँ कोई न कहे मुझे मेरा,
ऐसी सुहानी, अनोखी जगह ले चल,
मेरे मन अब कहीं और चल।
जहाँ हम तुम हों बस अकेले,
न हों पिछली यादों के झमेले,
बस अपनी मुलाकातों के हों मेले,
ऐसी निराली, अलबेली जगह ले चल,
मेरे मन अब कहीं और चल।
जहाँ न कोई मुझे कुछ कहे,
बस मैं ही कहूँ तू बस सुने,
सुनकर खयालों के सपने बुनें,
मेरी खातिर मेरे संग में चल,
मेरे मन अब कहीं और चल।
देखो जीवन की सांझ है आई,
डराती है जीवन की सच्चाई,
लगता है अपनी आन पर बन आई,
अब विलग राह से तू निकल,
मेरे मन अब कहीं और चल।

आँचल

माँ के आँचल से सरल, सुलभ,
और निर्मल कोई जगह नहीं
न मिल पाए उसके रहते, उसकी छाया,
ऐसी कोई वजह नहीं,
माँ की नजर से देखो तो जानो दोस्तो,
उससे दूर जाने लायक बड़ा, बच्चा कभी होता नहीं,
बड़ा नाजुक दिल होता है, माँ का दोस्तो,
टूट भी जाए तो बद्दुआ, कभी देता नहीं,
हर पल याद करती है, हर दिन राह तकती है,
दूर गए बच्चों को, वो याद बहुत करती है,
चाहती है, फिर से बच्चे, इतने छोटे हो जाएं,
उसके आँचल की छाया से, दूर न जाने पाएँ,
माँ के आँचल की छाया को, बेमोल न समझना "सपना"
नहीं मिलती जिसको वो, तो और कोई भी नहीं होता अपना।

वक़्त

वक़्त किसी का नहीं होता, और किसी के लिए नहीं रुकता,

पर वक़्त आता सभी का है,अच्छा भी और बुरा भी,

इसलिए अच्छे वक़्त में इतराना ठीक नहीं,

और बुरे वक़्त में धैर्य खोना भी ठीक नहीं,

वक़्त अच्छे अच्छों का, मुँह बंद कर देता है,

जिन्हें हम जवाब नहीं देते, उन्हें वक़्त जवाब देता है,

अच्छे वक़्त में ईश्वर का, धन्यवाद करना न भूलें,

और बुरे वक़्त में धैर्य से कम लेना न भूलें,

वक़्त अच्छे बड़े-बड़े, हादसों की दवा है,

धीरे-धीरे हिम्मत बंधाकर, आगे बढ़ना सिखाता है,

वक़्त जैसा सच्चा साथी, कोई नहीं इसे भुलाएं नहीं,

अतः हमेशा इसकी क़द्र करें, बेकार में गंवाएं नहीं।

बिखरते शब्द

बिखरते शब्दों को समेटकर, जैसे ही,
कागज पर उकेरा मैंने, तो देखा,
मेरे मन की व्यथा, मेरे सामने,
खड़ी मुस्करा रही थी और,
दे रही थी धन्यवाद, मुझे,
कि कम से कम वो बाहर आकर,
खुली हवा में सांस तो ले सकी।
बोली, अंदर तो मेरा दम, घुटा जा रहा था,
अंदर ही अंदर जैसे मेरा, सब कुछ लुटा जा रहा था,
भला हो इन बिखरते लफ्जों का,
जो मुझे बाहर आने को तो मिला।
मैं भी अचंभित थी, मन भी, कुछ हल्का-हल्का सा था,
उसका भारीपन भी व्यथा के साथ,
बाहर आकर चैन की सांस ले रहा था,
और बिखरते शब्दों को कागज पर,
सिमटा देख, मुझे धन्यवाद भी दे रहा था।

आखिर क्यों?

प्यार करना कोई गुनाह तो नहीं न,
फिर क्यों दुनिया की नजरें,
हमें और हमारे जैसों को,
अपराध बोध से भर देतीं हैं,
किया था मेरी एक सहेली ने, जब मैं पढ़ती थी,
अंजाम मौत, उसके पिता ने इतना पीटा उसे,
कि आग लगाकर खुदकुशी कर ली उसने,
क्यों? शुरू से ही इस दुनिया मे,
इतनी सुंदर भावना, इतने सुंदर प्रेम,पवित्रता की हद का अंजाम,
इतना भयंकर होता है, क्यों? आखिर क्यों?
दो दिलो की सुंदर, नाजुक सी भावनाएं,
जो किसी का कुछ नहीं बिगाड़ती,
क्यों सहन नहीं कर पाते उनके अपने ही, और
तथाकथित समाज के ठेकेदार,
क्यों उन्हें मौत को गले लगाने पर
मजबूर करते हैं, क्यों? आखिर क्यों ?
क्यों और कब तक, क्या हम उन्हें, जीने की मोहलत नहीं दे सकते,
दे सकते हैं, पर देते कहाँ हैं,
हम भी तमाशबीन बनकर,
उनका तमाशा देखते हैं और नहीं बदलते अपने
रूढ़िवादी विचारों को, क्यों? आखिर क्यों?

परेशानी

लगता है आप कुछ परेशान हैं,
पर, पूछें कैसे आपकी परेशानी,
सोचकर हम भी बेहद परेशान हैं,
हमें परेशान देखकर शायद,
आप और भी ज्यादा परेशान हो गए,

हम और आप दोनों ही परेशान न रहें,
इसके लिए कोई तीसरा होना चाहिए,
और हमारी परेशानी का हल, उसे ही ढूंढ़ना चाहिए,
आपको परेशानी न हो तो कहो,
आपकी परेशानी उसे बता दूं,
आपकी परेशानी की वजह से,
मैं भी बड़ी परेशान हूँ, उसे जता दूँ,
तब तो वह अपनी परेशानी का हल ढूंढ़ेगा,
हल ढूंढने के लिए वह हमारी, परेशानी पूछेगा,
जब तक खुलकर परेशानी का कारण नहीं बताएंगे,
वह भी परेशान ही होगा,
क्या तीसरे को बताना ठीक है, नहीं नहीं,
हम अपनी परेशानी का हल स्वयं ढूंढेंगे,
न खुद होंगे परेशान, न किसी को होने देंगे,
अपनी परेशानी का हल, हमें ही निकलना होगा,
जो होगा सबसे अच्छा हल और हमें परेशान भी नहीं रहने देगा।

मजदूर

जो दिन-रात मेहनत करता है,
न कभी मेहनत से डरता है,
जो घर सभी के बनाता है,
पर, खुद झोपड़े में रहता है,
जो खुद रूखी-सूखी खाता है,
पर दूसरों को स्वादिष्ट भोजन खिलाता है,
जो थोड़े में ही खुश हो जाता है,
पर सदा काम दूसरों के आता है,
झिड़की भी सबकी सहता है,
पर मुँह से कुछ न कहता है,
जो अभागा और मजबूर है,
जो मजदूर के नाम से मशहूर है,
वही तो सच्चा मजदूर है,
वही तो सच्चा मजदूर है,..!

प्रेम

कहते हैं प्रेम किया नहीं जाता, हो जाता है,

करने वाले का जैसे, सब कुछ कहीं खो जाता है,

भले ही मिल न पाएँ, कभी दोनों,

पर, दिल तो उनका, सदा के लिए एक हो ही जाता है,

पर ऐसा क्यों ?

कि सच्चा प्रेम करने वाले तो, अक्सर मिल नहीं पाते,

और दिखावटी प्रेम करने वाले, अधिकतर मिलकर एक हो जाते हैं,

फिर प्यार की सच्चाई के अभाव में, एक दूजे को झेल नहीं पाते हैं,

और दुनिया के सामने प्रेम का, गलत उदाहरण पेश करते हैं,

है अगर उन्हें सच्चा प्रेम तो, सब कुछ स्वीकार्य होना चाहिए,

और अगर नही है तो नहीं कभी भी, सच्चे प्रेम का दम भरना चाहिए।

अधर बोलते हैं

अधर बोलते हैं, नयन बोलते हैं,
बोलने से पहले, बहुत सोचते हैं,

कहीं तुम न सोचो, कि ये क्या बला है,
क्यों कर चला, प्यार का सिलसिला है,
हम जैसे तो इसमें, रब देखते हैं,
रब देखते हैं, बहुत सोचते हैं,
अधर बोलते हैं, नयन बोलते हैं,..

कहीं तेरी सीरत, कहीं तेरी सूरत,
पड़ती है मुझको, दोनों की जरूरत,
दोनों को मिलाकर ही , हम देखते हैं,
हम देखते हैं, बहुत सोचते हैं,
अधर बोलते हैं, नयन बोलते हैं,...

पहले जो थे तुम, अब वो नही हो,
गुजरी जो तुम पर, तुम भी सही हो,
तुम्हारी नजर से भी, हम देखते हैं,
हम देखते हैं, बहुत सोचते हैं,
अधर बोलते हैं, नयन बोलते हैं,...

काश!

काश!
पर लग जाते मेरे पैरों को,
कर पाती वह, जो करना चाहती थी,
काश!
जा पाती आसमाँ पार,
तोड़ सारे बंधनों को,
और जी पाती अपनी जिंदगी,
खुद ने सोची थी जैसी,
काश!
न होती कोई मजबूरी,
न होती कोई रोक टोक,
न होता किसी का लिहाज,
न होता किसी का संकोच,
काश!
बता पाती अपनी पसंद व,
नापसंद में अंतर,
जो समझते हैं, इनकी,
कोई खास पसंद नहीं,
इनको तो सब चल जाता है।
काश!

कुछ कहा तुमने?

मुझे अभी-अभी लगा,
कुछ कहा तुमने,

शायद कहना चाहते हो,
पर कहते नहीं क्यों?
क्यों? जिंदगी ने तुम्हें,
इतना खामोश कर दिया,
हमेशा चुहलबाजी करने वाला,शख्श,
कैसे इतना खामोश हो गया,
शायद जिंदगी से पूछना,
चाहता है, हर वक्त कि,
वो इतनी निर्मम क्यों है,
जो किसी का सोचा,
नहीं होने देती,
क्यों? आखिर क्यों?

कुछ और होती

तुम मिलते तो जिंदगी,
कुछ और होती,
रास्ते कुछ और होते,
मंजिलें कुछ और होती,
कुछ और होते जीवन के,
लंबे सफर के अनुभव,
पर वो तब होते, जब
तुम साथ होते मेरे,
पर तुम होते कैसे ? क्योकि,
तुम्हें तो होना ही नहीं था,
तुम तो एक अंतर्मुखी व,
खामोशी को ओढ़ने व पहनने वाले,
शख्स जो ठहरे।

अधूरा ही रह गया

जो सोचा था, जो चाहा था,
जो समझा था, जो जाना था,
जो पहचाना था, जो करना था,
सब अधूरा ही रह गया।
क्यों? हमारे साथ ही ऐसे हालात होते हैं,
जो चाहकर भी अपने मन का, कुछ नहीं कर पाते,
और वैसा तो बिल्कुल नहीं, जैसा हम चाहते हैं।
किसका क्या बिगड़ जाएगा?
जो अपनी जिंदगी हम अपने तरीके से जी लेंगे,
क्या सच मे 'सपना' बनकर जीना ही,
मेरी नियति है? या सपना समझ ही भूल जाऊं खुद को,
हाँ देखे थे मैंने भी कुछ सपने आंखें खोलकर,
सक्षम भी थी उन्हें पूरा करने में,
पर अपनों ने ही, पर काट दिए मेरे,
और मैं फिर भी फड़फड़ाती रही,
कोशिश करती रही उड़ने की,
पर नाकामयाब रही, और बेबस भी,
किसी की सद्भावना, किसी का आशीर्वाद,
जो नहीं था, साथ मेरे,
इसलिए शायद, सब,अधूरा ही रह गया,
और अब अधूरा ही रह जाएगा, मेरा सपना,
मेरा अपना सपनास्वाबलंबी होने का।

अनमोल वचन

1. "आशीर्वाद और दुआएँ तो, बिन मांगे मिलते है, बशर्ते आप उसके काबिल हों।"

2. जो झुकता नहीं, वो एक दिन टूट जाता है,
ठूँठ बनकर एक दिन सूख जाता है।

3. करोगे माँ-बाप से चालाकी तो कहाँ जाएगी,
तुम भी किसी के माँ-बाप हो, लौटकर आएगी।

4.झरनों की तरह झरते रहो, सरिता की तरह बहते रहो,
तारों की तरह चमकते रहो, फूलों की तरह महकते रहो।

5.ज्ञान और अभिमान का कोई मेल नहीं,
यह प्रकृति का नया-नया कोई खेल नहीं।

6.करता है पूजा, मंदिरों में जाकर, झुकाता है सिर को पत्थरों पर जाकर,
वरना झुकना और सिर झुकाना, जिंदों के सामने,
कहाँ आता है आदमी को।

7. खिलो तो पुष्प की तरह,जो खिलकर मुस्कराता है,
बिखरो तो पुष्प की तरह, बिखरकर खुशबू छोड़ जाता है।

8.आशीष और दुआ तो बिन मांगे ही मिलते हैं,
आपको कुछ करने की जरूरत नहीं, सदा आपकेसाथ चलते हैं।

9.आदमी, आदमी से आगे निकलना व उसे नीचा दिखाना चाहता है,
इस अंधी दौड़ में शामिल होना, कहाँ तक सही है।

10. आने वाला कल,कल बनकर हमारे पास नही आता कभी,
आज बनकर ही हमसे मिलता है।

11.हे प्रभु, मन का तम दूरकर, ज्ञान का दीप उर भीतर जगा दो।

12. धर्म सिखाता है हमें, आपस मे प्रेम करना,
अध्यात्म सिखाता है हमें, आत्मा से प्रेम करना।

13.दुनिया एक मेला है, माया का झमेला है,
संग कोई जाता नहीं, तुझे जाना अकेला है।

14.अंधे को अंधा कहना, कुछ गलत नहीं, पर कुछ तो सम्मान के साथ कहो,
कुछ देर उसकी जगह, अपने को रखकर, कुछ तो अंधेरे का दर्द सहो।

15.अधखिली कली को तोड़ना, बहुत कठोर दिलों का काम है, कोई मासूम दिल का नहीं।

16. घोंसला बनाने का हौसला केवल पक्षियों के पास ही होता है, बड़े-बड़े जानवरों के पास नहीं।

17. संतान का शीश हो और माता -पिता का आशीष भरा हाथ हो, तो फिर क्या कहना।

18.उदारता, सरलता, मानवता का जरूरी गहना है, जिससे मानव का व्यक्तित्व और भी खूबसूरत हो जाता है।

19.गुजरती हुई उम्र आदमी को, कुछ ऐसे पाठ पढ़ाती है, खुद ब खुद आदमी सब कुछ सीखते चलता है।

20.उदारता के दामन में छिपे हैं ढेरों खजाने,
गर पाना है तो, उसके चोले को धारण करना पड़ेगा।

21.अति की इति भी शीघ्र होती है, बस इंतजार करें।

22. गलत सहने वाला तुरंत दुखी होकर, बाद में सुखी हो सकता है, पर गलत करने वाला कभी सुखी नहीं हो सकता।

23. सफलता की मिसाल दाना लेकर दीवार पर चढ़ रही एक चींटी से बेहतर कोई नहीं।

24.किसी के दुख में शामिल होने से, उसका दुख तो कम नही होता, पर हमारी प्रवृति की पहचान होती है।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती अरविंद ताम्रकार 'सपना'

जन्म - 19 जनवरी 1964, सागर (म.प्र.)

पता - 42, अमरनाथ कॉलोनी, कोलार रोड, भोपाल।

अभिरुचि - बच्चों को पढ़ाना एवं अपने कर्तव्यों के प्रति जागरुक करना। अनाथ एवं वृद्ध जनों की सहायता करना एवं प्राणी मात्र के प्रति दया का भाव रखना।

प्रकाशन एक कोना दिल का, भीगा मन (काव्य संग्रह)

सम्मान - 1. राष्ट्रीय कवि संगम द्वारा 'शब्द शक्ति सम्मान'
2. अखिल भारतीय साहित्य परिषद प्रकोष्ठ द्वारा 'शब्द वलय सम्मान'
3. अखिल भारतीय साहित्य परिषद जबलपुर द्वारा सम्मानित।
4. शुभ प्रभात संस्था सागर द्वारा सम्मानित।
5. अखिल भारतीय साहित्य परिषद बालाघाट द्वारा सम्मानित।
6. अंतरा शब्द शक्ति द्वारा 'वुमन आवाज सम्मान 2018'।
7. अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2019।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-018-6

मूल्य- 60/-